दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 07/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अच्छा।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 142 टिप्पणी (Remarks):

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी भाषा के तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास में इसका कम्प्यूटरीकरण में सहज न हो पाना मुख्य दोष बताया गया था। ASCII जैसी एनकोडिंग्स में हालांकि हिन्दी के टंकण को सहज बनाने के प्रारंभिक प्रयास किये गए, किन्तु 8 बिट से एक बाइट बनाने वाली व्यवस्था पर आधारित होने के कारण कुल संकेत संख्या 128 ही बन पाती थी जो हिन्दी (देवनागरी) लिपि के सभी संकेतों को व्यक्त करने में असमर्थ थी।

ऐसे में 16 बिट की संरचना पर आधारित यूनीकोड के आगमन ने न सिर्फ हिन्दी बल्कि अन्य सभी भारतीय भाषाओं के तकनीकीकरण की राह आसान कर दी। इस व्यवस्था में कुल 65536 संकेत ~~उपलब्ध थे~~ कोडों की उपलब्धि के कारण प्रत्येक भाषा के प्रत्येक वर्ण के लिए अलग कोड की सुविधा उपलब्ध थी। अतः यूनीकोड के आगमन ने टंकण, मुद्रण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को न सिर्फ एकरूप बनाने में बल्कि सहज बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी योगदान से अभिभूत होकर अशोकचक्रधर कह उठते हैं

"सबसे प्यारी अपनी भाषा
कम्प्यूटर से जागी आशा
माँ हिन्दी की मिली गोद है
यूनीकोड का महामोद है"।

वस्तुत: यूनीकोड हिन्दी के कम्प्यूटरीकरण में उसी प्रकार का क्रांतिकारी परिवर्तन है, जैसे उपन्यास में प्रेमचन्द व नाटक में मोहन राकेश।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

जयंत विष्णु नार्लीकर खगोल-विज्ञान एवं खगोल-भौतिकी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक व ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के सम्बन्ध में नार्लीकर-हायले की 'स्टेडी स्टेट' थ्योरी (सिद्धान्त) के प्रणेता माने जाते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा भारत में ग्रहण करने के बाद नार्लीकर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये एवं वहाँ डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की।

भारत वापस आने के बाद उन्हें खगोल-शास्त्र एवं खगोल-भौतिकी अंतर-विश्वविद्यालय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और यहीं से नार्लीकर जी की रुचि विज्ञान के क्लिष्ट एवं सहज सिद्धांतों को हिन्दी में उपलब्ध कराने की ओर जागी।

रुचि विकसन के पश्चात नार्लीकर जी ने ब्रह्माण्ड एवं परमाणु विषयों पर हिन्दी में प्रभावी लेखन किया। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं - ब्रह्माण्ड के सिद्धान्त, धूमकेतु, तारों की जीवनगाथा, कैसा है सौरमंडल इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुस्तक लेखन के अलावा नार्लीकर जी ने देश के विभिन्न प्रौद्योगिकी महाविद्यालयों एवं स्कूलों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक आख्यान देने की परम्परा को विकसित किया एवं हिन्दी को तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनाने की अनुशंसा की।

इस प्रकार जयंत-विष्णु-नार्लीकर हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक लेखन व प्रचार-प्रसार के रत्न कहे जाएँ तो अतिशयोक्ति न होगी।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि को जहाँ एक तरफ कई तकनीकी कम्पनियों द्वारा तकनीकी प्रयोगों से असंगत लिपि कहकर नकारा गया, तो वहीं वी.पी. काले जैसे विद्वान तो यहाँ तक सहमत हो गए कि हिन्दी को रोमन लिपि में ही लिखा जाना चाहिए।

ऐसे समय में कम्प्यूटरीकरण के प्रयत्नों एवं उनकी सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि लिपि आधुनिक तकनीक के सभी यंत्रों से सुसंगत है।

ऐसे आरंभिक प्रयत्नों में पहला प्रयत्न रेमिंग्टन द्वारा देवनागरी के कीबोर्ड का विकास माना जाता है हालांकि यह दौर टाइपराइटरों का था, परन्तु तकनीक के क्षेत्र में हिन्दी का प्रवेश यहीं से हुआ।

कम्प्यूटरीकरण में प्रथम प्रयास किया हैदराबाद की कम्पनी ई.सी.आई.एल ने जिसने 'एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर' के स्तर पर हिन्दी मुद्रण हेतु सॉफ्टवेयर तैयार किए। हैदराबाद की ही डी.सी.एम कम्पनी का भी योगदान महत्वपूर्ण रहा।

आगे चलकर सिस्टम सॉफ्टवेयर के स्तर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पर भी कार्य होना शुरू हुए और माइक्रोसॉफ्ट ने 'हिन्दी विंडोज' तैयार करने हेतु देहरादून में एक केन्द्र की स्थापना की।

राजभाषा विभाग के तकनीकी प्रभाग का लीप (स्मंच) नामक सॉफ्टवेयर भी इस दिशा में ~~अद्भुत~~ प्रशंसनीय पहल है।

शब्दकोश विकास के स्तर पर देखें तो राजभाषा विभाग का ही 'शाब्दिका' एवं शिक्षण पैकेज के स्तर पर 'लीला' नामक पैकेज आरंभिक प्रयत्न माने जा सकते हैं।

इन्ही आरंभिक प्रयत्नों के प्रयास से हिन्दी तकनीकी क्षेत्र में निरन्तर विकासरत है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

शब्द जब व्याकरण-सम्मत होकर वाक्य का भाग बन जाता है तो पद कहलाता है। हिन्दी व्याकरण में पद दो प्रकार के माने गये हैं ; विकारी तथा अविकारी।

विकारी पद वे हैं जो लिंग, वचन, काल, पुरुष, भाव, वाच्य सापेक्ष होते हैं एवं उपरोक्त वर्णित विकारोत्पादक तत्वों में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होने का गुण धारण करते हैं।
ऐसे पद निम्नांकित है

i) संज्ञा
ii) सर्वनाम
iii) क्रिया
iv) विशेषण

उदाहरणार्थ: वचन परिवर्तन से विशेषण के रूप में परिवर्तन
जैसे काला लड़का जाता है (एकवचन)
काले लड़के जाते हैं (बहुवचन)

~~इसी प्रकार~~
~~पुरुष परिवर्तन से सर्वनाम परिवर्तन~~
~~यथा "मेरा घर यही है"~~
~~"तुम्हारा घर यही है"~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अविकारी पद विकारोत्पादक तत्वों से निरपेक्ष होते हैं एवं हर स्थिति में समान रूप बनाए रखते हैं ऐसे पद निम्नांकित हैं

1) समुच्चय बोधक या योजक
ii) क्रिया विशेषण
iii) विस्मयादिबोधक
iv) संबंध बोधक

यथा 'तेजी से दौड़ते हुए' में क्रिया तेजी से क्रिया विशेषण है जो हर स्थिति में अपरिवर्तित रहेगा

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

वाक्य वह लघुतम भाषिक इकाई है जो स्वतन्त्र अर्थ-बोधन में सक्षम होती है।

हिन्दी की वाक्य संरचना में सार्थकता हेतु तीन गुणों को अनिवार्य माना गया है।

1) **आकांक्षा** : वाक्य के विभिन्न पद एक-दूसरे की सहायता से ही सम्पूर्ण अर्थ बोधन कर सकते हैं यथा 'राम घर जाता है' में राम संज्ञा है एवं कर्ता है जिसे अर्थबोधन के लिए क्रिया की आवश्यकता है।

2) **योग्यता** : वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से सार्थक शब्दों का समूह होते हुए भी लोक-दृष्टि से सार्थक अर्थबोध की योग्यता रखना चाहिए जैसे कि 'पानी से लकड़ी धुला दो' निरर्थक वाक्य है।

3) **सन्निधि** : वाक्य के पद भौगोलिक व कालिक दृष्टि से पर्याप्त निकट होने चाहिए जैसे कि एक पुस्तक के चार अलग-अलग पृष्ठों पर लिखे शब्द वाक्य निर्माण नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

- हिन्दी में वाक्य संरचना का SOV (कर्ता - कर्म - क्रिया) क्रम स्वीकार किया गया है। जैसे कि राम घर जाता है
  राम (कर्ता) घर (कर्म) जाता है (क्रिया)

- वाक्यों को स्वतंत्रता की दृष्टि से दो अन्य श्रेणियों में भी विभाजित किया जा सकता है। (समानाधिकरण संबंध)

1) संयुक्त वाक्य : दो स्वतन्त्र वाक्यों का समूह जिसमें प्रत्येक वाक्य स्वतन्त्र अर्थबोधन की क्षमता रख सकता है

ii) मिश्र वाक्य (व्यधिकरण संबंध) : जिसमें एक वाक्य दूसरे पर आश्रित हो।

कुल मिलाकर हिन्दी वाक्य संरचना मानक एवं सहज है।

$5\frac{1}{2}/10$

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि को यूँ वैज्ञानिकता के प्रतिमानों पर कसने पर गुणों यूँ तो गुणों की संख्या दोषों पर भारी पड़ती है पर फिर भी यदि सतत् विकास एवं सुधार की अवधारणा पर ध्यान दें तो कुछ दोष गिनाए जा सकते हैं जिनसे मुक्त हो जाने पर लिपि आक्षेप-रहित हो जाएगी।

ऐसे कुछ दोष निम्नांकित हैं

1. ध्वनि एवं संकेतों के स्तर पर

(क) लिपि में कुछ संकेत अनावश्यक बताये गये हैं जिनका न तो अब उच्चारण प्रचलन में है और न ही भाषा वैज्ञानिकों को ज्ञात है। ऐसे संकेतों को हटाया जा सकता है।

उदाहरणार्थ : ष, ॠ (दीर्घ ऋ), ऌ इत्यादि

(ख) देवनागरी में मात्राओं, रेफ, आदि को मिलाकर संकेतों की संख्या बहुत अधिक हो जाती है जो किसी नए व्यक्ति के लिपि सीखने में बाधा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्पन्न करती है।

3) मात्राओं के नियम में कुछ अवैज्ञानिकता पाई जाती है यथा 'ि' की मात्रा वर्ण के पहले जबकि उच्चारण बाद में किया जाता है जबकि कुछ मात्राएँ ऊपर तो कुछ नीचे लगाई जाती हैं।

4) शिरोरेखा को कई भाषाविदों ने अनावश्यक बताया है एवं इसे लगाने को महज समय नष्ट करने की प्रक्रिया कहा है।

5) संयुक्त व्यंजनों को लिखने की एकरूप व्यवस्था नहीं है। कहीं ऊपर तक, कहीं नीचे, कहीं सामने यथा कर्म, गद्य, नृत्य तीनों में संयुक्ताक्षर अलग-अलग प्रकार से लिखे गए हैं।

6) अनुस्वार एवं अनुनासिक के स्तर पर

अनुस्वार एवं अनुनासिक के नियम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निश्चित नहीं हैं। नासिक्य ध्वनियों में कहीं 'बिन्दु' (·) तो कहीं चंद्रबिन्दु लगाने की परम्परा है।

बनावट

अक्षरों की बनावट अत्यन्त जटिल बताई गई है जिससे नव-प्रशिक्षु को भाषा व लिपि अध्ययन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

विराम चिन्ह

विराम चिन्हों के स्तर पर अर्धविराम (;) का प्रचलन में न होना तथा पूर्णविराम (।) का ~~अत्य~~ ज्यादा स्थान घेरना देवनागरी की एक ~~कमी~~ सीमा बताया गया है।

वर्तनी

वर्तनी के स्तर पर 'हाइफन' के प्रयोग का कोई निश्चित नियम उपलब्ध नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्णों की क्लिष्टता

क्लिष्टता की समस्या जैसे कि - ण, रा
झ, भ आदि का प्रचलन

इस प्रकार देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि होने के बावजूद सुधार की गुंजाइश रखती है तथा भाषा-विदों का समूह एवं राष्ट्रभाषा विभाग इस ओर लगातार प्रयासरत हैं।

अच्छा

8/20

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी संस्कृत की तीन लिंगों की व्यवस्था पालि, प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी की दो लिंगों की व्यवस्था में पर्यवसित हुई है। विकास की प्रक्रिया में नागर, अपभ्रंश वह अंतिम अवस्था थी जहाँ 'नपुंसक लिंग' पाया जाता है।

इस प्रकार हिन्दी में दो लिंगों की व्यवस्था है।

1) स्त्रीलिंग 2) पुल्लिंग

चूंकि हिन्दी की लिंग व्यवस्था लोक-प्रचलन पर आधारित है, इसलिए कोई निश्चित नियम तो नहीं बनाए जा सकते, परन्तु कुछ प्रत्ययों पर आधारित शब्द प्राय: स्त्रीलिंग माने जाते हैं। वे इस प्रकार है

इका → बालिका
इन → मिस्तरिन
'इ' → रति
आइन → ठकुराइन
'ई' → गौती, लड़की
आ → गंगा, यमुना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इया → बिटिया
आनी → जेठानी
इसी प्रकार पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में बदलने के कुछ नियम भी लोक-प्रचलन में हैं जैसे कि –

आ → इया (बेटा – बिटिया)
अ → आइन (ठाकुर → ठकुराइन)
ई → इन (नाई → नाइन)
अ → आनी (जेठ → जेठानी)
आदि।

मुख्य समस्या लिंग निरपेक्ष शब्दों में आती है जिनका लिंग निश्चित नहीं है, जैसे कि पदनाम, शहरों के नाम, धातुओं के नाम, वस्तुओं - त्यौहारों के नाम इत्यादि।

इस व्यवस्था हेतु भी कुछ नियम स्वीकार्य हैं यथा

i) सभी पहाड़ों, सागरों, तालाबों के नाम पुल्लिंग तथा नदियों, वस्तुओं आदि के नाम स्त्रीलिंग माने जायेंगे

ii) 'विदेशज' शब्दों को प्रायः पुल्लिंग की श्रेणी में स्वीकार किया जाएगा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) पद-नामों यथा प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि को लिंग निरपेक्ष मानते हुए वाक्य रचना की जाएगी।

इस प्रकार लिंग निर्धारण की अधिकतर समस्याएँ सुलझा ली गई हैं एवं जो अभी भी मौजूद हैं लोक-प्रचलन इन्हें भी सुलझा लेगा।

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी के प्रसिद्ध व्याकरण-विद माने जाते हैं जिन्होंने व्याकरण लेखन के पतर्थ काल में (1950 के आसपास) हिन्दी भाषा के मानकीकरण में विशेष योगदान दिया।
किशोरीदास वाजपेयी 'ब्रजभाषा-व्याकरण' जैसी पुस्तकों से चर्चा में आए तथा 1935 के आसपास व्याकरण-लेखन की आवश्यकता नए प्रयत्नों को समाहित करने की दृष्टि से पुनः महसूस की गई, तो 'नागरी प्रचारिणी सभा' ने यह दायित्व वाजपेयी जी को ही सौंपा।

सभा ने वाजपेयी जी के लेखन में वैयक्तिकता तथा प्रसंग से भटकाव की समस्या को पहचाना तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं राहुल सांकृत्यायन आदि के सहयोग से एक समिति गठित की, जिसने ग्रंथ लेखन हेतु निश्चित नियम निर्धारित किये और इन नियमों के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दायरे में ही किशोरीदास वाजपेयी जी ने व्याकरण लेखन किया।
उन्होंने अपने व्याकरण लेखन में उन समस्त परिवर्तनों को ध्यान दिया जो कामता-प्रसाद गुरु के व्याकरण के बाद भाषा में हुए थे।

इस प्रकार श्री किशोरीदास वाजपेयी ने 'हिन्दी शब्दानुशासन' की रचना करके हिन्दी के मानकीकरण को गति प्रदान की।

आलोचकों का मानना है कि पर्याप्त ध्यान रखने के पश्चात भी उनकी पुस्तक में कहीं-कहीं लोकजीवन, वैयक्तिकता व गुरु जी की आलोचना आ ही गई है यथा कर्तृ वाच्य एवं कर्म-वाच्य के विश्लेषण में।

परन्तु वाजपेयी जी ने अपने ग्रंथ को श्री कामता प्रसाद गुरु को समर्पित कर एक हद तक आलोचकों को उत्तर दे दिया है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

किसी भी लिपि की वैज्ञानिकता से तात्पर्य है कि लिपि के नियम निश्चित एवं तर्कपूर्ण होने चाहिए तथा इनमें ~~यादृि~~ यादृच्छिकता की उपस्थिति न्यूनतम होनी चाहिए ताकि लिपि सीखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह कार्य अत्यन्त सहज व सरल हो सके।

किसी भी लिपि की वैज्ञानिकता के कुछ निश्चित प्रतिमान निर्धारित किए गए हैं जो इस प्रकार हैं

I) लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही संकेत होना चाहिए।

II) एक संकेत एक ही ध्वनि को प्रदर्शित ~~करे~~ करना चाहिए

III) लिपि के वर्ण आधुनिक टंकण एवं मुद्रण ~~[illegible]~~ के साधनों की दृष्टि से सरल होना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~हिंदी~~ देवनागरी लिपि अपनी प्रकृति में ऐसे तत्वों को धारण करती है जिससे वह पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि सिद्ध हो जाती है।

1) ~~हिंदी~~ देवनागरी में एक ~~वर्ण एक~~ संकेत एक ही ध्वनि को निरूपित करता है
यथा। 'क' के लिए 'क' जबकि अंग्रेजी में 'c' ~~और 'k' दोनों~~ से 'स' और 'क' दोनों का निरूपण होता है।

II) देवनागरी में एक ध्वनि हेतु एक ही संकेत की व्यवस्था है यथा 'उ' के लिए 'उ' जबकि अंग्रेजी में 'oo' तथा 'u' दोनों से 'उ' की ध्वनि प्रदर्शित होती है।

III) देवनागरी में वर्णों का क्रम इस प्रकार निश्चित किया गया है कि वह मुख विवर से निकलने वाली ध्वनियों के स्थानों से सुसंगत है। जैसे कि मुख विवर से यदि स्थानों की विवेचना की जाए तो कण्ठ, तालु, मूर्धा, ~~क~~ जिह्वा, दन्त, ओष्ठ, नासिका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

यही क्रम बनेगा। हिन्दी में वर्ण-समूह भी इसी क्रम में है

कण्ठ : अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, य

तालु इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ

मूर्धा ट, ठ, ड, ढ, ण

इत्यादि

इसी क्रम में पहले स्वर तथा बाद में व्यंजन रखे गए हैं क्योंकि श्वास पहले स्वरों के रूप में ही निकलती है।

iv) मात्राओं तथा शिरोरेखा की व्यवस्था देवनागरी को वैज्ञानिक लिपि बनाती है। मात्राओं के माध्यम से संयुक्त-उच्चारण की वैज्ञानिकता का ध्यान रखा गया है तो शिरोरेखा के माध्यम से विभिन्न शब्दों में स्पष्ट अंतर बना रहता है।

v) संयुक्ताक्षरों का प्रयोग स्थानलाघव व प्रयत्नलाघव की दृष्टि से लिपि को वैज्ञानिक बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण - अ, त्र, ज्ञ

(c) इस प्रकार देवनागरी लिपि वैज्ञानिकता के समस्त प्रतिमानों पर खरी उतरती है।

अच्छा

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी की लिंग व्यवस्था संस्कृत की तरह निश्चित नियमों पर आधारित न होकर लोक-प्रचलन से विकसित हुई है। इस दृष्टि से लिंग व्यवस्था में मानकीकरण का स्तर अन्य व्यवस्थाओं की तरह वस्तुनिष्ठता को प्राप्त नहीं कर सका है।

लिंग व्यवस्था से संबंधित कुछ समस्याएँ इस प्रकार हैं

~~1) विदेशज शब्दों के लिंग निर्धारण का कोई निश्चित नियम नहीं है विशेषतः~~

1) लिंग निर्धारण में 'नपुंसक लिंग' की व्यवस्था न होने से लिंग-निरपेक्ष वस्तुओं, पदार्थों तथा लोकव्यवहार के अन्य पक्षों के लिंग का कोई निश्चित नियम नहीं है। यथा वाहनों को ही ले लें, तो 'बस' स्त्रीलिंग मानी जाती है जबकि 'ट्रक' पुल्लिंग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ii) लिंग निर्धारण की समस्या सबसे प्रबल रूप में दिखती है जब 'विदेशज' शब्दों की बारी आती है। जो शब्द विदेशी भाषाओं में पुल्लिंग माने गये उनका यहाँ स्त्रीकरण कर दिया गया है। यथा — माचिस, टॉर्च

iii) पदनामों के स्तर पर लिंग परिवर्तन कई जगह हास्यास्पद होने लगता है एवं लोक-संस्कृति के मूल्यों के खिलाफ भी। उदाहरणार्थ : राष्ट्रपति का स्त्रीलिंग राष्ट्रपत्नी कर देना। अत: पदनामों में स्त्रीलिंग का कोई मानक स्वरूप उपस्थित नहीं है।

iv) विभिन्न बोलियों एवं उपबोलियों के ~~स्तर~~ पर भी लिंग निर्धारण में विभिन्नता पाई जाती है जबकि सभी बोलियाँ हिन्दी भाषा की ही हों जैसे अवधी एवं बुंदेली में 'टाइम' को लेकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार हिन्दी की लिंग-व्यवस्था मानकीकरण की पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाई है, परन्तु यह कहना अनुचित न होगा कि ज़्यादातर समस्याओं को सुलझा लिया गया है तथा जो दिक्कतें शेष हैं; उनमें भी प्रयास जारी है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्माण की दृष्टि से शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है

1) रूढ़ शब्द: रूढ़ शब्द वे शब्द हैं जो ~~किसी exp~~ 'मूल रूप' को धारण करते हैं तथा स्वतन्त्र अर्थ देने में सक्षम होते हैं। जैसे 'विधि' ऐसे शब्द ज्यादातर संस्कृत की परम्परा से सीधे ग्रहण किये गए हैं

ii) यौगिक शब्द : दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों से मिलकर बने शब्द यौगिकशब्द कहलाते हैं। यौगिक शब्दों के दोनों भाग अपने आप में स्वतन्त्र शब्द होते हैं।

यथा : कर्तव्यरत = कर्तव्य + रत

iii) योगरूढ़ : योगरूढ़ शब्द वे शब्द हैं जो बने तो दो शब्दों के योग से थे, परन्तु अब किसी तीसरे अर्थ की ही अभिव्यक्ति करते हैं
यथा → चंद्रशेखर, पीताम्बर इत्यादि

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ये शब्द एक निश्चित अर्थ के लिए रूढ़ हो गए हैं।

स्रोत के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

1) तत्सम शब्द : तत्सम शब्द वे शब्द हैं जो सीधे संस्कृत की परंपरा से ग्रहण कर लिए गए हैं

उदाहरण : घृत , अनुज इत्यादि

II) तद्भव शब्द : तद्भव का अर्थ है 'उससे उत्पन्न' अर्थात संस्कृत से उत्पन्न शब्द जो सरलीकरण की प्रक्रिया में कुछ परिवर्तित हो गए हैं।

उदाहरण - घृत → घी
मातृ → माता

III) देशज शब्द वे शब्द हैं जो भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हुए तथा क्षेत्र विशेष में सीमित रूप से प्रयुक्त होते हैं। देशज शब्दों का संबंध मुख्यत: बोली से होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उदाहरण: घँटिया, लुटिया इत्यादि

विदेशज: दूसरी भाषाओं से लिए गए शब्दों को विदेशज शब्द कहा जाता है। उदाहरणार्थ
फारसी से → दरबार
अंग्रेजी से → साइकिल इत्यादि

अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद 'प्रयोगवाद' के समकालीन बिहार में उत्पन्न आंदोलन है जो प्रयोगवाद को 'प्रयोगशील' आन्दोलन बताता था तथा स्वयं को असली 'प्रयोगवाद' आंदोलन बताता था।

प्रपद्यवाद को आलोचकों द्वारा नकेनवाद का भी नाम दिया जाता है क्योंकि प्रपद्यवाद के तीन कवियों - नरेश कुमार, केसरी नाथ तथा नलिन विलोचन शर्मा के नामों के प्रथमाक्षरों से मिलकर बना है।

प्रपद्यवादी कवियों की मान्यता है कि प्रयोगवादी दौर के शुरू होने से पहले ही (तार-सप्तक के प्रकाशन के पहले) ही वे कविता में नवीनता तथा समस्त प्रतिमानों का नकार कर प्रयोगरत रहने की उद्घोषणा कर चुके थे। इन कवियों का मानना है कि तत्कालीन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोगवादी आन्दोलन परम्पराओं का पूर्ण नकार नहीं करता और नही प्रयोग को एकमात्र प्रतिमान के रूप में स्वीकृत करता है जबकि उनका 'प्रपद्यवाद' इन सभी गुणों से युक्त है।

संग्रह 'नकेन के प्रपद्य'

समकालीन आलोचना में प्रपद्यवाद को विशेष सम्मान प्राप्त नहीं है तथा एक नकारात्मक धारणा के रूप में देखा जाता है।

अकविता की पृष्ठभूमि

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तारसप्तक

तारसप्तक का प्रकाशन प्रयोगवाद के प्रणेता सच्चिदानंद-हीरानंद-वात्सायन 'अज्ञेय' द्वारा 1943 के दौर में किया गया। तथा इसे ही प्रयोगवादी आंदोलन का आरम्भ माना जाता है।

तारसप्तक वस्तुतः उन कवियों की रचनाओं का संकलन है जो न तो छायावाद की रोमानी भावानुभूति से सहमति रखते थे न ही प्रगतिवाद की वैचारिक यांत्रिकता से। ऐसे कवि बौद्धिकता एवं भावुकता के उचित संयोजन को कविता का ध्येय मानकर प्रयोगशीलता पर बल देते थे।

अज्ञेय ने अपनी विचारधारा से मिलते-जुलते ऐसे कवियों की कविताओं का संकलन किया जो बाद में 'नई कविता' आंदोलन का आधार भी बना।

अज्ञेय ने तारसप्तक के कवियों को 'नवीन राहों का अन्वेषी' कहा।

विशेषताएं — स्वानुभूति की प्रामाणिकता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, यथार्थ के प्रति अनुभूत दृष्टि, कुंठा का प्रावल्य, नवीन प्रतीक एवं बिंब, शब्दों का खुला आग्रह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर

ऐसे कवियों में स्वयं अज्ञेय, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, ~~केदार~~ ॰ आदि प्रमुख हैं। कुल 7 कवियों की कविताओं को तार सप्तक में स्थान मिला। इस प्रकार तार-सप्तक का स्थान एक नई कविता धारा के उन्नयन हेतु अतुलनीय एवं अक्षुण्ण है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावाद आंदोलन उत्पत्ति काल से ही विवादों से घिरा रहा है। एक तरफ आचार्य शुक्ल ने उसे ईसाई संतों के फेंटसमाटा के अनुकरण का आंदोलन बताया, तो दूसरी तरफ स्वच्छन्दतावाद के विकास की राह में व्यवधान। आचार्य शुक्ल की नकारात्मक दृष्टि एवं तत्कालीन आलोचना में उचित स्थान प्राप्त न होने के कारण चारों छायावादी कवियों को आलोचना के क्षेत्र में उतरना पड़ा और इसकी शुरुआत की सुमित्रानन्दन पंत ने 'पल्लव की भूमिका' लिखकर।

एक तरफ पंत ने पल्लव की भूमिका में तत्कालीन परंपरावादी आलोचना दृष्टियों के छायावाद संबंधी मत को नकारा, तो दूसरी तरफ इस आंदोलन के महत्व को स्थापित करते हुए इसका स्वरूप स्पष्ट किया। उन्होंने छायावाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर लगे 'पलायनवादी' आरोपों को नकारते हुए बताया कि किस प्रकार छायावाद 'समाजविरोधी नहीं' समाज में स्वतन्त्रता' की स्थापना करने वाला आन्दोलन है। उन्होंने छायावाद में निहित वैयक्तिकता को राष्ट्रसंगत वैयक्तिकता तो बताया ही, इसपर आरोपित रहस्यवादी पर्दों का भी उद्घाटन किया।

इस प्रकार 'पल्लव की भूमिका' का महत्व छायावाद आंदोलन को स्थापित करने के लिए हमेशा याद रखा जाएगा।

बेहतरीन

4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please don't write anything in this space

(घ) साकेत की उर्मिला

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के ~~प्रसिद्ध~~ प्रतिष्ठित कवियों में तो गिने ही जाते हैं, इनकी प्रसिद्धि नवजागरण तथा नई सामाजिक दृष्टि की स्थापना को लेकर 'राष्ट्रकवि' के रूप में भी है।

और इसी प्रसिद्धि का प्रमुख आधार है इनका साकेत' महाकाव्य।

गुप्त जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के लेख ' ~~उर्मिला विष~~ कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से प्रभावित होकर तुलसी, बाल्मीकि, भवभूति के काव्यों में उपेक्षित नारियों को स्थापित करने का प्रण लिया तथा 'उर्मिला के महत्व' को स्थापित कर पूर्व कवियों के कलंक को परिमार्जित किया।

साकेत ~~महाकाव्य~~ में गुप्त जी ने दो सर्गों को (नवम् एवं दशम्) उर्मिला को समर्पित किया है। उनकी उर्मिला स्थिर चित्त, कर्तव्यशील, दृढ़प्रतिज्ञ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा प्रकृतिप्रेमी नारी है जो कहती है
" रह चिर दिन तू हरी भरी
बढ़ सुख से बढ़ सृष्टि सुंदरी"

हालांकि कहीं - कहीं उर्मिला को
प्रिय - प्रेम में विगलित भी
दिखाया है यथा
' अध्वनि रोता है मेरा गान
प्रिय तक नहीं पहुँच पाती है उसकी
कोई तान '

इस प्रकार 'साकेत की उर्मिला'
यशोधरा, विष्णुप्रिया आदि नारियों
की श्रृंखला का एक आधार स्तम्भ है
जो गुप्त जी को त्यागशील नारीदृष्टि
का द्योतक है और उनकी प्रसिद्धि
का कारण भी।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महादेवी वर्मा के काव्य को आलोचकों ने छायावाद के अभिव्यक्त रूप का उदाहरण बताया है। छायावाद का एक प्रमुख अंश रहस्यवादिता भी है और महादेवी की रहस्यानुभूति इसी रहस्यवादिता का प्रसार।

महादेवी की रहस्यानुभूति को कुछ आलोचकों ने अलौकिक ईश्वर के प्रति प्रेम से संबंधित रहस्य बताया है, तो कई आलोचकों ने उनके निजी जीवन में दाम्पत्य सुख के अभाव की अभिव्यक्ति के रूप में।

महादेवी ने स्वयं भी इन दोनों पक्षों को स्वीकार किया है।

महादेवी की रहस्यवादिता में ~~उनकी~~ तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों में प्रेम को अभिव्यक्त न कर पाने की वेदना भी दिखती है और इसलिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनका प्रिय अंधेरे में आता है
। मेरे प्रिय को भाता है
तम के पर्दे में आना'

उनका रहस्य वेदना मिश्रित रहस्य है
तथा इस वेदना से निकलने की कोई
इच्छा भी महादेवी में नहीं दिखती है
। मिलन का मत नाम लो
मैं विरह में चिर हूँ'
इस प्रकार महादेवी की रहस्यानुभूति
साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) हिन्दी के नवगीत आन्दोलन का परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नई कविता के दौर में यह माना जाने लगा था कि गीत जैसी विधा, जो कि गलदश्रु भावुकता के संप्रेषण हेतु काम्य मानी जाती है, का इस युग में कोई स्थान नहीं है तथा अनुभूत यथार्थ को संप्रेषित करने में गीत विधा अक्षम है क्योंकि तत्कालीन यथार्थ जटिल एवं संश्लिष्ट होता है और गीत अपनी प्रकृति में सरल।

इस विचार के विरुद्ध कुछ नए लेखकों ने गीत को ~~समस्त~~ समस्त संप्रेषणों के योग्य समझा तथा 1960 के दौर के यथार्थ से संबंधित विचारों को गीत में लिखना शुरु किया। इसी आंदोलन को नवगीत आंदोलन कहा गया तथा इसके प्रणेता बने रवीन्द्र भ्रमर तथा रमेश रंजक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नवगीत आंदोलन की विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1) तत्कालीन लोकतान्त्रिक प्रक्रिया की कुरूपताओं का प्रदर्शन

2) मशीनीकरण तथा शहरीकरण से उत्पन्न अलगाव बोध का चित्रण

3) क्रांतिकारी चेतना से सम्पन्न कुछ गीत भी इस आंदोलन में लिखे गए

4) समाज के निम्न-वर्ग के प्रति संवेदना तथा ~~सामाजिक~~ सामाजिक यथार्थ का चित्रण

शिल्पगत विशेषताएँ

1) लय का ध्यान रखते हुए भी नवगीत आंदोलन में तुकांतता का विशेष आग्रह दिखाई नहीं देता

2) भाषा: भाषा के स्तर पर नवगीत आंदोलन किसी भी आभिजात्यता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से मुक्त है तथा अपने भावों की सुग्राह्य अभिव्यक्ति करना ही इसका लक्ष्य है। इसलिए भाषा में कोई विशेषाग्रह नहीं दिखता।

इस प्रकार नवगीत आन्दोलन गीत परम्परा को ~~पुनर्जीवन प्रदा~~ पुनर्जीवित प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम रहा।

11 ½ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय के यात्रा-साहित्य की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी के यात्रा साहित्य की ओर दृष्टिगत होने पर मूलतः दो विधाओं ~~की~~ की परम्परा मिलती है जो एक दूसरे से भिन्न होकर भी संवेदनात्मक रूप से समानताएं रखते हैं। यथा - संस्मरण तथा यात्रा वृत्तान्त

अज्ञेय इन दोनों विधाओं के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं। अज्ञेय ने अपने जीवन में अनेकानेक यात्राऐं कीं तथा उन्हे ~~उस~~ संकलित करते हुए साहित्य की रचना की ऐसे दो संकलन प्रमुख हैं

1) ~~एक बूँद सहसा उछली - जो कि उनकी अस्त भ्रमण की यात्राओं का दस्तावेज~~

~~1)~~ एक बूँद सहसा उछली में वे अपनी विदेश यात्राओं की चर्चा करते हैं तथा 'अरे यायावर रहेगा याद'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मे वे भारत भ्रमण को प्रदर्शित करते हैं।

अज्ञेय के यात्रा-साहित्य में सांस्कृतिक, भौगोलिक वर्णन तो है ही, परन्तु वे यहीं नहीं रुकते, वे विचारों की दुनिया में डुबकी लगाते हुए प्रत्येक परम्परा का गहन विश्लेषण करते हैं तथा संस्कृति की ऐतिहासिकता तथा भीतन्तता को वर्णित करते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग किन्नर समुदाय के सुरा-प्रेम तथा देशी सुरा के वर्णन में दिखता है जहाँ वे एक तरफ अपने सुरा मोह को दर्शाते हुए भी न पी पाने की असमर्थता व्यक्त करते हैं।

अज्ञेय के यात्रा साहित्य का दूसरा विशिष्ट पहलू है उनकी संश्लिष्ट भाषा तथा संदर्भानुकूल सटीक शब्दावली का प्रयोग जो संस्कृति की झलक तो दे ही देता है, चिंतन की गहराई को भी व्यक्त करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार अज्ञेय ~~की~~ का यात्रा-साहित्य, हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि है जो वैचारिक दृष्टि से सर्वोच्च स्थान को ~~धारण~~ ग्रहण करती है।

अच्छा

$\frac{8\frac{1}{2}}{15}$

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नई कविता में निहित लघुमानव की अवधारणा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कविता उस दौर की कविता है जब आज़ादी के स्वप्नों के पूर्ण न हो पाने की स्थिति में आम जन मोहभंग को महसूस कर रहा था तथा क्रांतिकारी चेतना के विपरीत शहरीकरण ने मनुष्य को स्थितियों द्वारा चालित करके ~~अलगाव~~ संत्रास, अकेलापन आदि से युक्त कर दिया था। अर्थात् जो मानव अब तक सृष्टि का केन्द्र समझा जाता था, वही अब मशीनों के सामने तुच्छ समझा जाने लगा था।

'लघुमानव की अवधारणा' नई कविता में अस्तित्ववादी प्रभाव (सार्त्र द्वारा पश्चिम में चलायी गयी विचारधारा) से आई जहाँ यह माना जाता है कि जो व्यक्ति अपने निर्णय स्वतन्त्र रूप से नहीं ले सकता, वह मानव न होकर एक वस्तु मात्र है। यही विचार मानव के आत्मविश्वास को ठेस पहुंचाते हुए न्यूनता बोध कराता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

है और लघुमानव की धारणा की उत्पत्ति होती है जिसके केन्द्र में यह है कि मनुष्य स्थितियों के हाथों एक खिलौना मात्र है जो स्थितियों से संचालित होता है।

यथा

" जिंदगी ~~अब~~ ~~पहली~~ सस्ती
सिगरेट के जलते टुकड़े की तरह है
जिसे कुछ पल में पीकर नाली
में फेंक दूँगा " ।

परन्तु नईकविता में लघुमानव की धारणा को स्वीकार्य करते हुए सिर्फ नैराश्य नहीं है। कुछ कवियों ने इस नैराश्य से निकलकर आत्मविश्वास की एक आस भी जगाई है तथा मानव को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है

" मैं रथ का टूटा पहिया हूँ
किन्तु मुझे फेंको मत
क्या जाने इतिहासों की
सामूहिक गति सहसा झूठी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पड़ जाने पर,
सच्चाई रूठे पहियों का सहारा लै"
इस प्रकार लघुमानव की धारणा नव-लेखन के दौर की विशिष्ट अवधारणा है जहाँ नैराश्य और आत्मविश्वास समन्वित होकर व्यक्त हुए हैं।

अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation